B.A.I (H) उपन्यास के तत्व ① 4.5.2020

G.P.R. हिन्दी विभाग

पाश्चात्य विद्वानों ने उपन्यास के मुख्यतः छः तत्व निर्धारित किए हैं
(1) कथानक (2) पात्र या चरित्र-चित्रण (3) कथोपकथन (4) देशकाल (5) शैली (6) उद्देश्य

1. कथानक – कथानक या कथावस्तु उपन्यास का प्राणाधार है। संपूर्ण उपन्यास की कहानी जिन उपकरणों से मिलकर बनती है वे कथावस्तु या कथानक कहलाते हैं। यही उपन्यास का मूलाधार है, जो लेखक अपनी आवश्यकतानुसार विस्तृत जीवन क्षेत्र से चुनता है। उपन्यास की कथावस्तु में प्रमुख कथानक के साथ-साथ कुछ प्रासंगिक कथाएँ भी चल सकती हैं; किंतु दोनों कथाओं का सम्बन्ध एक दूसरे से स्पष्ट होना चाहिए। उसके कथानक का आधार ~~कल्पना~~ वास्तविक जीवन होना चाहिए जिससे कि उसमें स्वाभाविकता रहे। उपन्यास के कथानक के तीन आवश्यक गुण हैं – रोचकता, स्वाभाविकता एवं प्रवाह या गतिशीलता। उपन्यास के प्रथम पृष्ठ में ऐसी शक्ति होनी चाहिए कि वह इसी कि पाठक के हृदय में ऐसा कौतूहल जागृत कर दे कि पाठक उसी रचना को पढ़ने के लिए विवश हो जाए। यदि कोई पाठक उपन्यास को जान-बूझकर अधूरा छोड़ देता है, तो यह दोष पाठक का नहीं, अपितु लेखक का है, जो अपने उपन्यास के कथानक में प्राण नहीं फूँक सका।

2. चरित्र-चित्रण – पात्रों के चरित्र-चित्रण में भी स्वाभाविकता, सजीवता एवं क्रमिक विकास का होना आवश्यक है। प्राचीन महाकाव्यों की भाँति उपन्यास के पात्र न तो अतिमानवीय होते हैं और न ही उनका चरित्र प्रारम्भ से लेकर अन्त तक एक जैसा होता है। पात्रों में वर्गगत विशिष्टताओं के साथ-साथ वैयक्तिक विशेषताओं का भी समन्वय होना चाहिए, अन्यथा उनके व्यक्तित्व का विकास नहीं हो पाएगा। 'गोदान' में होरी, हीरा और शोभा - तीनों एक ही परिवार और एक ही वर्ग से सम्बन्धित हैं, फिर भी तीनों में इतना सूक्ष्म अन्तर रखा गया है जिससे हम एक दूसरे को पहचान सकें, अलग कर सकें। पात्रों के चरित्र में परिवर्तन या विकास परिस्थितियों व वातावरण के प्रभाव से क्रमशः दिखाया जाना चाहिए। उपन्यासकार के पात्र सुष्ठु स्वाभाविक और मनोवैज्ञानिक होना चाहिए। चरित्र में यथार्थ और आदर्श का समन्वय होना चाहिए। यथार्थ ~~परक~~ चरित्र में अच्छे और बुरे दोनों का समावेश होता है लेकिन आदर्शवादी में सिर्फ अच्छाई का पुट होता है। कुल मिलाकर उपन्यास में पात्र वह स्तम्भ हैं जिसके सहारे जीवन यथार्थ या परिस्थितियों का प्रासाद खड़ा है। चरित्र के अभाव में उपन्यास की कल्पना भी नहीं ~~की~~।

B.A. I (Hons) **उपन्यास के तत्व - (2)** 4.5.2020

G.P.R. हिन्दी विभाग

कथोपकथन - उपन्यास के तत्वों में कथोपकथन का महत्वपूर्ण स्थान है। कथोपकथन के माध्यम से दो या दो से अधिक पात्रों के बीच परस्पर बातचीत होती है और कथानक का क्रमशः विस्तार होता है साथ ही घटनाओं में तीव्र गति का संचार होता है। उपन्यासकार कथोपकथन के माध्यम से पात्रों के चरित्र को स्वाभाविक और अनुकूल बनाता है तथा इसमें प्रसंग के अनुसार शब्दों का इस्तेमाल करे सजीव और आकर्षक रंग देता है। परिणामस्वरूप कृति में एक विशेष गरिमा का संचार होता है। यदि उपन्यास को रोचक तथा तथ्यपरक बनाना है तो कथोपकथन सरल और पात्रानुकूल होना चाहिए जिससे कथावस्तु में सजीवता और यथार्थता आ जाती है। संवाद का प्रयोग सुगठित और सुव्यवस्थित होने से कथानक में रोचकता और जिज्ञासा बनी रहती है। यदि लेखक में कथोपकथन-योजना की क्षमता है, तो वह कार्य-कारण मीमांसा का काम कथोपकथन से ही ले सकता है। कथोपकथन (संवाद) उद्देश्यपूर्ण होना चाहिए साथ ही चरित्रानुसार पात्रों की भाषा का प्रयोग होने पर पाठक भी साथ कथा पर बनी रहती है, फलस्वरूप पाठकवर्ग का ध्यान विषयवस्तु पर केन्द्रित रहता है। अतः कथोपकथन कथा को रोचक एवं मनोरंजक तो बनाता ही है साथ ही कथावस्तु का रीढ़ का कार्य भी करता है।

देशकाल एवं वातावरण - साहित्यकार अपने युग का स्रष्टा होता है किन्तु उसका साहित्य सार्वकालिक एवं सार्वभौमिक होता है। इस बिंदु पर विचार करते हुए उपन्यासकार उपन्यास की रचना प्रक्रिया में युगीन परिस्थितियों का समावेश करता है ताकि उसमें वास्तविकता का बोध हो। युगधर्म का पालन करते हुए वृंदावनलाल वर्मा के ऐतिहासिक उपन्यास, प्रेमचंद के सामाजिक उपन्यास, जैनेन्द्र और इलाचंद्र जोशी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास, रेणु के आंचलिक उपन्यासों आदि में युगधर्म का भाव स्पष्ट रूप से झलकता है। देशकाल का वास्तविक उद्देश्य कथानक और चरित्र का स्पष्टीकरण है। अतः इसे उसका साधन ही होना चाहिए, साध्य नहीं। यदि उपन्यासकार अपने समाज का अत्यंत यथार्थ-जीवन का चित्रण करता है, तो वह न केवल साहित्य की सृष्टि करता है, वरन् सांस्कृतिक और सामाजिक इतिहास के लिए सामग्री तैयार करता है या पृष्ठभूमि बनता है। कुल मिलाकर मनुष्य का सम्बन्ध अपने युग, समाज, देश और परिस्थितियों से रहता है इसलिए मनुष्य के चरित्र की पृष्ठभूमि में देशकाल का चित्रण उसका आवश्यक अंग है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर GPR - हिन्दी विभाग

1. सरदार पूर्ण सिंह का जन्म कहाँ हुआ था?

उ० - पाकिस्तान के एबटाबाद में

2. 'सच्ची वीरता' निबंध के लेखक कौन है?

उ० - सरदार पूर्ण सिंह

3. भीष्म साहनी किस विचारधारा के लेखक थे, वाम पंथी या दक्षिणपंथी

उ० - वामपंथी

4. 'बलराज माय ब्रदर' आत्मकथा के रचनाकार का नाम लिखें।

उ० - भीष्म साहनी

5. 'सूर साहित्य' के रचनाकार कौन है?

उ० - आ० हजारी प्रसाद द्विवेदी

6. 'अनाम दास का पोथा' उपन्यास के रचनाकार का नाम लिखें।

उ० - आ० हजारी प्रसाद द्विवेदी

7. 'ठेस' कहानी के लेखक कौन है?

उ० - फणीश्वर नाथ रेणु

8. 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक के नाटककार का नाम लिखें।

उ० - जयशंकर प्रसाद

9. 'शेखर - एक जीवनी' उपन्यास के लेखक कौन है?

उ० - अज्ञेय

10. 'रक्खा पहलवान' का चरित्र किस कहानी से सम्बन्धित है?

उ० - मलबे का मालिक

लक्षणा शब्द की वह शक्ति है जिससे उसका अभिप्राय सूचित होता है। शब्द की जिस शक्ति से उसका वह साधारण से भिन्न और दूसरा वास्तविक अर्थ प्रकट होता है, उसे लक्षणा कहते हैं। शब्द का वह अर्थ जो अभिधा शक्ति द्वारा प्राप्त न होकर लक्षणा शक्ति द्वारा प्राप्त हो, लक्षितार्थ कहलाता है।

लाक्षणिक अर्थ को व्यक्त करने वाली शक्ति का नाम लक्षणा है वे शब्द लक्षक हैं जिनसे वह अर्थ निकलता है। आचार्य मम्मट ने लक्षणा की परिभाषा और उसका स्वरूप इस प्रकार लिखा है—

मुख्यार्थबाधे तद्योगे रूढ़ितोऽथ प्रयोजनात्।
अन्योऽर्थो लक्ष्यते यत् सा लक्षणारोपिता क्रिया॥

अर्थात् जहाँ मुख्यार्थ की बाधा हो दूसरा मुख्यार्थ से सम्बन्धित लक्ष्यार्थ हो और तीसरा जहाँ रूढ़ि अथवा प्रयोजन हो, तो लक्षणा शब्द शक्ति होती है। जैसे सिंह अखाड़े में उतर रहा है। यहाँ सिंह वीर पुरुष के लिए रूढ़ हो गया है। इस प्रकार लक्षणा के आधार के लिए तीन तत्व आवश्यक हैं—

(1) मुख्यार्थ की बाधा — जब मुख्य अर्थ की प्रतीति में बाधा पड़ती है अथवा यह ज्ञात हो कि वक्ता जिस अर्थ को व्यक्त करना चाहता है, वह व्यक्त न हो तब उसे मुख्यार्थ की बाधा कहते हैं।

(2) मुख्यार्थ और लक्ष्यार्थ का योग (सम्बन्ध) — मुख्यार्थ से बाधित होने पर जो अन्य अर्थ ग्रहण किया जाता है, उसका मुख्य अर्थ के साथ सम्बन्ध नितान्त आवश्यक है। यही मुख्यार्थ का योग है।

(3) रूढ़ि या प्रयोजन — रूढ़ि का अर्थ है प्रसिद्धि अर्थात् किसी विशेष प्रकार से कहने का ढंग या अभिप्राय विशेष के कारण वक्ता या किसी विशेष (साक्षात्) अर्थ को व्यक्त करना। उदाहरण - तुम गधे हो यहाँ मनुष्य गधा नहीं हो सकता अतः यहाँ मुख्यार्थ में बाधा है क्योंकि कहाँ मनुष्य और कहाँ गधा। किन्तु गधे का सामान्य अर्थ है व्यक्त करता है— मूर्खता। जिस शब्द की शक्ति से अति मूर्खता का अर्थ व्यक्त होता है, उसे लक्षणा कहते हैं। गधे की मूर्खता प्रसिद्ध ही है। उपर्युक्त विवेचन के आधार पर निष्कर्ष यह है कि लक्षणा में मुख्यार्थ का बाध, मुख्यार्थ तथा लक्ष्यार्थ का परस्पर योग आवश्यक है, रूढ़ि या प्रयोजन में से किसी एक होना भी आवश्यक है।

B.A. III - वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर 9.5.2020

G.P.R हिन्दी विभाग

1. 'श्रृंगार' रस का स्थायीभाव क्या है?

उ० - रति

2. 'उत्साह' किस रस का स्थायीभाव है।—

उ० - वीर रस

3. 'उत्पत्तिवाद' के उद्भावक मीमांसक कौन हैं?-

उ० - भट्टलोल्लट

4. सांख्यमतानुयायी भुक्तिवाद के उद्भावक का नाम लिखें।—

उ० - भट्टनायक

5. व्यभिचारीभाव का पर्यायवाची बतलावें।—

उ० - संचारीभाव

6. 'ध्वनि सम्प्रदाय' के प्रवर्तक कौन हैं?

उ० - आ० आनन्दवर्धन

7. 'रीति सम्प्रदाय' के आचार्य का नाम बतलावें।

उ० - दण्डी

8. 'रस सम्प्रदाय' के आद्य प्रवर्तक कौन हैं?

उ० - आ० भरत

9. "शब्द एवं अर्थ के परस्पर सम्बन्ध को अभिधा कहते हैं।" किस आचार्य का कथन है?-

उ० - प० जगन्नाथ

10. 'शब्दशक्ति' के कितने प्रकार हैं?

उ० - अभिधा, लक्षणा, व्यंजना।

साक्षात संकेतिक अर्थ को बतलाने वाली शब्द की प्रथम शक्ति को अभिधा कहते हैं, वह शब्द वाचक कहलाता है। मुख्य या प्रथम अर्थ बोधक होने के कारण इस अभिधा शक्ति को मुख्या या अग्रिमा भी कहते हैं। पंडितराज जगन्नाथ "शब्द एवं अर्थ के परस्पर सम्बन्ध को अभिधा कहते हैं", मुख्यार्थ की बोधिका होने के अतिरिक्त यह शक्ति पद और पदार्थ के पारस्परिक सम्बन्ध का भी ज्ञान कराती है।

हिन्दी के आचार्यों में भिखारीदास काव्यनिर्णय में अभिधा का लक्षण इस प्रकार लिखते हैं—

अनेकार्थ हू सब्द में एक अर्थ की व्यक्ति।
तेहि वाच्यारथ को कहैं सज्जन अभिधासक्ति॥

रसपीयूषकार सोमनाथ ने लिखा है—

या अक्षर को यह अरथ दीकहीं ये ठहराय।
जानि परै जातै सु वह अभिधावृत्ति कहाय॥

डॉ० भगीरथ मिश्र ने अभिधावृत्ति के महत्त्व का वर्णन करते हुए लिखा है कि— "भट्टनायक आदि अभिधा को विशेष महत्त्व देते हैं। उनकी दृष्टि से रस की अनुभूति कराने में अभिधा शक्ति ही प्रधान है। उनके द्वारा साधारणीकरण और भोजकत्व के द्वारा रसास्वादन होता है। अतः अभिधा ही मुख्य शक्ति है।

प्रसिद्ध आचार्य देव का भी कथन है—

अभिधा उत्तम काव्य है, मध्य लक्षणालीन।
अधम व्यंजना रस विरस, उलटी कहत नवीन॥

प्राचीनों के मत के अनुसार उत्तम काव्य अभिधा में रहता है। इससे ही रस की निष्पत्ति होती है।

शब्द शक्ति के तीन भेद — रूढ़, यौगिक और योगरूढ़

1. रूढ़ शब्द के खंड नहीं किया जा सकता। सम्पूर्ण शब्दों का एक ही अर्थ होता है। जैसे - गाय, पेड़, कलम आदि।
2. प्रत्यय, कृदन्त, समास इत्यादि के संयोग से बने वे शब्द जिन्हें खंड किया जा सकता है और खंडित अंश का अर्थ निकलता है, यौगिक शब्द कहा जाता है, जैसे - मधुशाला, पाठशाला, विद्यार्थी आदि।
3. योगरूढ़ शब्द ऐसे शब्द कहलाते हैं जिन्हें खण्डित करने पर खंडित अंश अपना सामान्य अर्थ को छोड़कर विशेष अर्थ का बोध कराते हैं। जैसे पंकज = पंक का अर्थ कीचड़ और ज का अर्थ है जन्म लेनेवाला अर्थात कीचड़ से जन्म लेनेवाला। कीचड़ से बहुत कुछ जन्म लेता है लेकिन पंकज का अर्थ कमल के लिए रूढ़ हो गया है।